माता प्रसाद

सचिव
भारत सरकार
जल संसाधन मंत्रालय

प्राक्कथन

हमारी दार्शनिक परम्परा में यह विश्वास किया जाता है कि क्षितिज, जल, पावक, गगन एवं समीर जीवन के पांच मूल तत्व हैं। पर आज इनका अस्तित्व खतरे में है, क्योंकि हमने इनका प्रबंधन बुद्धिमत्ता एवं कौशल से नहीं किया है। जनसंख्या की बेतहाशा वृद्धि के कारण जल की मांग पर दबाव बढ़ता जा रहा है। पर्यावरणीय प्रदूषण का भी इस पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। सभी संसाधनों, विशेष तौर पर भूजल, का तो कहीं-कहीं अत्यधिक दोहन हुआ है। हम यह सुनिश्चित मानकर चलते हैं कि जल तो उपलब्ध है ही, पर हम यह नहीं समझ पाते कि जल संसाधन भी जोखिम में हैं और संकट आसन्न है।

विगत कुछ वर्षों से सम्पूर्ण विश्व में यह महसूस किया जा रहा है कि कभी समाप्त न होने वाला प्रकृति का वरदान "जल", हमारे अविचारपूर्वक उपयोग से, बढ़ती हुई आबादी की मांगों को पूरा करने में असमर्थ होगा। भारत एक विशाल देश है। हमें प्राकृतिक जल संसाधनों के आयोजन, प्रबंधन, विकास एवं संरक्षण की आधुनिक तकनीकों को विकसित करने तथा उसे आम जनता तक पहुंचाने की आवश्यकता है।

विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्र में बढ़ते आयामों का फायदा तभी है जब उनकी जानकारी आम जनता तक पहुंचे। इस दिशा में राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की द्वारा जलविज्ञान के क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली की परिभाषाओं को एक पुस्तिका के रुप में संकलित किया गया है। भाषा के महत्व को स्वीकार करते हुए इसे द्विभाषी रखा गया है। मुझे आशा हे कि संस्थान का यह प्रयास जलविज्ञान की भूमिका को आम जनता तक पहुंचाने में सहायक सिद्ध होगा।

(माता प्रसाद)